

: Review Questions: शास्त्राष्टक

- (१) — साधु माते दशमो ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ शास्त्रस्वार्थाय माते राजवामां जायते चो।
- (२) — स्वर्ग, मर्क, पुत्र्य, पाप, मरायिदरे क्षेत्रा वगैरे परीक्ष पदाद्यो करवोय चो।
- (३) — विनाशा - निरपेक्ष रचने पाजके जाऊ जायारो जात्मानुं खरन तर चो।
- (४) — शास्त्र ना सर्व तीर्थांर जावंत तरके चो अने गुराद्वर जावंतोने नने विप्रवर्धन तरके चो।
- (५) — मरायोरु जावला माते परेची शरक चो शास्त्रदृष्टिनी।
- (६) — द्योने अविज्ञान अने मनःपरिवर्तन राय चो।
- (७) — साधु जावंतो पासो यम्यक्षु विप्रांर शास्त्रयक्षु पण राय चो।
- (८) — पू. ररमद्वुरी अने पू. उमास्वामिचर्यो रयके गंदा शास्त्रा तर शिवाय।
- (९) — शास्त्रवेदन अरेले सर्वकामांरुं रित अने रक्षणे तर तनुं वरन।
- (१०) — शास्त्रांरुं दीपक जावने विद्यावृक्ष जांरुं मारुं मार्ग जावला जावला पण चोड मोक्ष सुख परोयारुं न शके।
- (११) — विनाशा जावलांरुं जावलांरुं जावलांरुं शास्त्रांरुं नार।
- (१२) — शास्त्रांरुं जावलांरुं जावलांरुं जावलांरुं पण जो जाह र्शियाओ नीवर पूर्वक करो तो पण जात्मानुं रित संधाय।
- (१३) — स्वार्थाय अरेले वाचना, पुचनना, परावर्तना, अनुभवे।
अने — (जावलांरुं लगे.)